विद्यालङ्कार (B.A. Sanskrit Hons.)
संस्कृत विषय के लिये विस्तृत पाठ्यक्रम
Detail of the Core Course for Sanskrit
सत्र- प्रथम Semester –I

आधारभूत पत्र (Core paper) **Paper– HSA-C112**	**संस्कृतसाहित्य का परिचयात्मक अध्ययन** **Inctroductional study of Sanskrit Literature**	**पूर्णाङ्क -100** **सत्रान्त परीक्षा -70** **आन्तरिक परीक्षा-30** **क्रेडिट- 06**

प्रस्तावित पाठ्यक्रम (Prescribed Course)
खण्ड- क (Section-A) - वैदिकसाहित्य
खण्ड- ख(Section-B) - वाल्मीकि - रामायण
खण्ड- ग (Section-C) - महाभारत
खण्ड- घ (Section-D) - पुराण

पाठ्यक्रम का उद्देश्य-

यह पाठ्यक्रम छात्रों को संस्कृत साहित्य के विकास क्रम की यात्रा से परिचित कराता है जिसकी सीमा वैदिक साहित्य से लेकर पुराण साहित्य तक है। यह विद्यार्थियों को विभिन्न शास्त्रीय पद्धतियों की रूपरेखा से अवगत कराता है जिसके माध्यम से विद्यार्थी संस्कृत साहित्य और शास्त्र की विभिन्न पद्धतियों को जान सकेंगे।

पाठ्यक्रम अध्ययन परिणाम-

1. इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से छात्रों को संस्कृतसाहित्यगत विपुल वाङ्मय की जानकारी होगी।
2. साहित्यगत उदात्त भावनाओं के अध्ययन का भी निश्चितरूपेण जीवन पर प्रभाव होगा जिससे वे समाज के लिए उपयोगी होंगे।

घटकानुरूप विभाजन(Unit-Wise Division)

खण्ड-क(Section – 1) वैदिकसाहित्य

घटक (Unit)-1(क) वैदिकसंहिताओं (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद) का रचना काल एवं विषय-वस्तु।

(महर्षि दयानन्द कृत ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के अनुसार)

(ख) वेदों में निहित धर्म और दर्शन का स्वरूप (महर्षि दयानन्द कृत ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के अनुसार वेदोक्त धर्म विषय, उपासनाविषय एवं आकर्षणानुकर्षण विषय)

घटक (Unit)-2 ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् तथा वेदाङ्ग का संक्षेप में परिचयात्मक अध्ययन

खण्ड-2 (Section – 2)

वाल्मीकि – रामायण

घटक (Unit)-1वाल्मीकि - रामायण का रचना काल, विषय- वस्तु तथा आदिकाव्यत्व।

घटक (Unit)-2वाल्मीकि - रामायण का सांस्कृतिक महत्त्व (शिक्षा का स्वरूप, पारिवारिक स्वरूप, सदाचार, स्त्री सम्मान।

खण्ड-3 (Section – 3)

महाभारत

घटक (Unit)-1 महाभारत का रचनाकाल, विकास एवं विषय-वस्तु।

घटक (Unit)-2 महाभारत का विश्वज्ञानकोषस्वरूप, यक्षयुधिष्ठिर सम्वाद का महत्त्व, तप का स्वरूप एवं महत्त्व, पर्यावरण-चेतना, वर्णाश्रमधर्म।

खण्ड-4 (Section – 4)

पुराण

घटक (Unit)-1 पुराणोंकी विषय- वस्तुएवंलक्षण।

घटक (Unit)-2 पुराणों का सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्त्व।

संस्तुतग्रन्था:

1.स्वामी दयानन्द सरस्वती, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, परोपकारिणी सभा, अजमेर
2.बलदेव उपाध्याय, संस्कृत साहित्य का इतिहास, शारदा निकेतन, वाराणसी,
3. बलदेव उपाध्याय, वैदिक साहित्य और संस्कृति, वाराणसी
4. बलदेव उपाध्याय,पुराण विमर्श
5. प्रीतिप्रभा गोयल, संस्कृतसाहित्य का इतिहास, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर.
6. उमाशंकर शर्मा ऋषि, संस्कृतसाहित्य का इतिहास, चौखम्बा भारती अकादमी, वाराणसी
7. राधावल्लभ त्रिपाठी, संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
8.A.B. Keith,History of Sanskrit Literature, also Hindi translation, MLBD, Delhi. (हिन्दी अनवुाद, मंगलदेव शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास,दिल्ली).
9. M. Krishnamachariar, History of Classical Sanskrit Literature, MLBD, Delhi.
10. Gaurinath SHSAtri, A Concise History of Sanskrit Literature, MLBD, Delhi.
11. Maurice Winternitz, Indian Literature (Vol. 1-2I), also Hindi Translation, MLBD, Delhi.